ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-11* February- 2017
Anthology : The Research

हिंदी साहित्य के प्रमुख निबंधकार: परिचयात्मक संदर्भ (भारतेन्दु युग के विशेष संदर्भ में)

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास बहुत लम्बा और पुराना है। निबंध हिंदी साहित्य की सर्वाधिक प्रचलित एवं महत्वपूर्ण विधा है जो विभिन्न रुचियों और पृष्ठभूमि के लेखकों को अपनी ओर आकर्षित करने और साथ ही विभिन्न प्रकार के निबंध लिखने हेतु प्रेरित करती रही है। निबंध हिंदी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है जिसके विकासक्रम को हमेशा देखा गया है। हिंदी साहित्य के इतिहास का शायद ही कोई ऐसा काल हो जिसमें निबंध न लिखे गए हों। निबंध शैली ने अधिकांश साहित्यकारों को लेखन हेतु आकर्षित किया है।

हिंदी साहित्य ने हिंदी जगत को आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे अनेकों निबंधकार दिए हैं जिन्होंने अपने अपने तरीके से निबंध लेखन में अपना योगदान दिया है। वर्तमान में जिन हिंदी निबंधकारों के योगदान को याद किया जाता है, उनमें से कुछ प्रमुख हैं- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन', बालमुकुन्द गुप्त, राधाचरण गोस्वामी महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि। निबंध लेखन की दृष्टि से हिंदी साहित्य का प्रत्येक युग उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है, परंतु इन समस्त युगों में भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं क्योंकि इन दो युगों ने हिंदी निबंध को विशिष्ट पहचान प्रदत्त की जो अनवरत रूप से आज तक कायम है।

द्वितीयक तथ्य आधारित इस शोधपत्र के अंतर्गत भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग के प्रसिद्ध निबंधकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

मुख्य शब्दः साहित्य, निबंधकार, परिचयात्मक, संदर्भ, भारतेन्दु, द्विवेदी, युग ।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में हिंदी निबंध की दृष्टि से, भारतेन्दु काल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतेन्दु काल में ही हिंदी निबन्ध की नींव रखी गई और यहीं से हिंदी निबंध को एक विधा के रूप में पहचान प्राप्त हुई। यह नवजागरण का समय था और तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों की मांग थी कि भारतीयों की दीन-दुखी दशा को लेखन के द्वारा जन-जन तक पहुँचाया जाये। इस काल में पुराने गौरव, मान, ज्ञान, बल-वैभव को फिर लाने का प्रयत्न हो रहा था। लेखक अपनी भाषा को भी हर प्रकार से सम्पन्न और उन्नत करने में लग गए थे। इस काल के लेखक स्वतंत्र विचारों के थे। उनमें अक्खड़पन और फक्कड़पन भी था। यह युग निबन्ध लेखन हेतु अनुकूल होता था, अतः, इस युग में अच्छे निबन्ध लिखे गये।

भारतेन्दु काल का वातावरण और परिस्थितियां गद्य लेखन हेतु पर्याप्त रूप से अनुकूल था जिसके प्रभाव से उस युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन, बालमुकुन्द गुप्त, राधाचरण गोस्वामी जैसे प्रमुख निबन्धकार हुए। भारतेन्दु-काल के निबन्धकारों की विशेषताएँ हैं- निबन्धों के विषयों की विविधता, व्याकरण-सम्बन्धी लापरवाही और अशुद्धयां, देशज या स्थानीय शब्दों का प्रयोग, शैली के विविध रूप और विचार-स्वतन्त्रता, समाज-सुधार, देश-भक्ति, पराधीनता के प्रति रोष, आत्म-पतन पर खेद, देशोत्थान की कामना, हिन्दी-सम्मान की रक्षाभावना, हिन्दू, पर्व-त्यौहारों के लिए उत्साह और नवीन विचारों का स्वागत। इन समस्त निबंधकारों का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय और योगदान निम्न प्रकार है-

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु जी ने विभिन्न विषयों पर अनेकों निबंध लिखे जो आज भी सम्पूर्ण भारत में स्कूल एवं कॉलेज स्तर पर पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं। उनके निबंधों को तीन श्रेणियों में

वर्गीकृत किया जा सकता है- विवरणात्मक निबंध, विचारात्मक निबंध एवं व्यंग्यात्मक निबंध।

विवरणात्मक निबंध

'कश्मीर कुसुम' 'उदयपुरोदय', 'कालचक्र', 'बादशाह दर्पण'-ऐतिहासिक, 'वैद्यनाथ धाम', 'हरिद्वार', सरयू पार की यात्रा'

विचारात्मक निबंध

'वैष्णवता और भारतवर्ष'

व्यंग्यात्मक निबंध

'लेवी प्राणलेवी', 'स्वर्ग में विचार-सभा का अधिवेशन', 'पाँचवें पैगम्बर', 'अंग्रेज स्त्रोत', कंकड़ स्तोत्र' आदि।

भारतेन्दु के निबंधों की भाषा स्वच्छ और श्लेषपूर्ण है, साथ ही, उनमें बीच बीच में उर्दू की बढ़िया शैली का प्रभावी प्रयोग किया है।

बालकृष्ण भट्ट

बालकृष्ण भट्ट जिनको हिंदी का 'मानतेन' कहा जाता है, भारतेन्दु युग के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार थे। भट्ट का निबंध संग्रह उच्च कोटि का था और उन्होंने अनेकों तत्कालीन समस्याओं और व्यावहारिक विषयों पर अनेकों निबंध लिखे। भट्ट ने दैनिक व्यवहार की चलती भाषा में समाज, व्यक्ति, जीवन, धर्म, दर्शन, राष्ट्र, आदि सभी विषयों पर आपने लिखा। उनके समस्त निबंधों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-

वर्णनात्मक निबंध

'मेला-ठेला, 'वकील'

भावात्मक निबंध

'आंसू, 'चन्द्रोदय, 'सहानुभूति, 'आशा माधुर्य, 'खटका'

विचारात्मक निबन्ध

'आत्म-निर्भरता, 'कल्पना-शक्ति, 'तर्क, और 'विश्वास'

हास-परिहास एवं विनोद-व्यंग्ययुक्त निबंध

'इंगलिस पढ़े तो बाबू होय', 'रोटी तो कमा खाय किसी भांति', 'मुछन्दर', 'अकल अजीरन राग' आदि।

प्रतापनारायण मिश्र

प्रताप नारायण का सर्वाधिक योगदान जन साहित्य के सृजन और लेखन से है। उनके द्वारा सृजित गद्य साहित्य में उनके छोटे-बड़े सभी प्रकार के विषय सम्मिलित थे। 'नाक', 'भौह', 'वृद्ध', 'दांत', 'पेट', 'मृच्छ' आदि विषयों पर लिखे गए उनके निबंध न केवल मनोरंजन से भरपूर थे, वल्कि और देश-प्रेम, समाज-सुधार, हिन्दी के प्रति प्रेम, स्वाभिमान, आत्म-गौरव के सन्देश से भी भरे थे। इस क्षेत्र में वह आज भी विशेष रूप से जाने जाते हैं। इनका व्यक्तित्व और निबन्ध पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में पर्याप्त रूप से सक्षम थे। लापरवाही, चुभता व्यंग्य, गुदगुदीभरा विनोद इनकी रचनाओं की विशेषताएँ हैं। आपके गद्य साहित्य की अनुपम विशेषता उनके द्वारा प्रयुक्त चुलबुली भाषा है जो पाठकों को हंसने और सम्पूर्ण निबंध की गहराई में जाने हेतु विवश करती थी। भारतेन्दु युग में इस प्रकार की चुलबुली भाषा लिखने वाला और कोई नहीं हुआ। उनके निबंध प्रायः उनके द्वारा प्रकाशित पत्र 'ब्राह्मण' में प्रकाशित होते थे। सरल घरेलू बोलचाल की भाषा, पूर्वी बोलियां, कहावतें और मुहावरों का प्रयोग इनकी निबंध शैली की प्रमुख विशेषताऐं थीं। 'आत्मीयता', 'चिन्ता', 'मनोयोग' आदि विचारात्मक निबन्ध उनकी सर्वाधिक प्रसिद्द रचनाऐं हैं।

बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन

भारतेन्दु युग के अगले प्रसिद्द और लोकप्रिय निबंधकार बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' थे जिनको उनके निरालेपन के लिए याद किया जाता है। लेखन के सामान्यतया प्रचलित उद्देश्यों से अलग उनका उद्देश्य श्रेष्ठ लेखन करना था जो किसी भी सीमा से परे था। उनकी भाषा स्वाभाविक, प्रवाहमय, सुबोध भाषा नहीं , बल्कि सोचे-समझे शब्दों के सुव्यवस्थित प्रयोग से भरपूर थी । भाषा बनावटी होते हुए भी उसमें कहीं-कहीं विवेचन की शक्ति पायी जाती है। प्रेमधन द्वारा प्रकाशित 'नागरी नीरद' और 'आनन्द कादम्बिनी' नामक पत्र अपने समय में प्रसिद्द और लोकप्रिय थे। उनके शीर्षक जैसे सम्पादकीय, सम्पत्ति सीर, हास्य, हरितांकुर, विज्ञापन और वीर बधूटियां उनकी भाषा-शैली को प्रकट करते हैं। उनकी प्रसिद्द रचनाऐं हैं- 'हमारी मसहरी' 'हमारी दिनचर्या' 'फागुन', 'मित्र', 'ऋतु -वर्णन आदि।

बालमुकुन्द गुप्त

बाल मुकुन्द गुप्त भारतेन्दु युग के अगले प्रसिद्द निबंधकार थे जो अपने हास्य-व्यंग्य के लिए जाने जाते थे। उनका व्यंग्य शिष्टता पूर्ण हिंदी और उर्दू मिश्रित भाषा में था। उनको भारतेन्दु युग के अन्तिम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण निबन्धकार के रूप में भी हिंदी साहित्य में जाना जाता है। 'शिवशम्भू' के नाम से 'भारतमित्र' में वह 'शिवसम्भू' का चिट्ठा' लिखा करते थे। हास्य-व्यंग्य के बहाने 'शिवशम्भू का चिट्ठा नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए।

राधाचरण गोस्वामी

भारतेन्दु युग में जब भी प्रगतिशील लेखकों और निबंधकारों की चर्चा होती है, तो सबसे पहले राधाचरण गोस्वामी का नाम इस युग के प्रगतिशील लेखकों में गिना जाता है। सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों का उपहास करने में वह कभी भी पीछे नहीं रहे। उदहारण के लिए- 'यमपुर की यात्रा' में उन्होंने धार्मिक अंधविश्वास जिसके प्राभान्तर्गत लोग गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करते हैं, का मजाक उड़ाया है। 'यमपुर की यात्रा' के अंतर्गत गाय के स्थान पर कुत्ते की पूंछ पकड़कर वैतरणी पार कराई गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हिंदी गद्य साहित्य की समीक्षा भारतेन्दु युग विभिन्न निबंधकारों द्वारा लिखे गए निबंधों के सन्दर्भ में करना।
2. भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकारों के संक्षिप्त साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालना
3. भारतेन्दु युग में लिखे गए प्रमुख निबंधों और निबंध शैली के बारे में बताना।

प्राक्कल्पना

1. हिंदी साहित्य का भारतेन्दु युग हिंदी निबंध के लिए प्रमुख रूप से जाना जाता है।
2. भारतेन्दु युग में निबंध लेखन हेतु सकारात्मक वातावरण था।
3. भारतेन्दु युग ने अनेकों महान निबंधकारों को जन्म दिया।
4. भारतेन्दु युग के निबंधकारों ने विचारात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक निबंध लिखे।

साहित्य पुनरावलोकन

श्याम तिवारी (1982) अपने शोध प्रबंध 'प्रताप नारायण मिश्र एवं बाल कृष्णा भट्ट के निबंधों का तुलनात्मक अध्ययन' के अंतर्गत भारतेन्दु युग के दोनों महान निबंधकारों के संदर्भ में लिखते हैं कि 'भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र के अननंतर प्रमुख निबंधकार प्रताप नारायण मिश्र एवं बाल कृष्ण भट्ट का हिंदी साहित्य में वही योगदान है और महत्व है जैसा अंग्रेजी साहित्य में जोसफ एडिसन और रिचर्ड स्टील का था। पत्रकारिता और निबंध के विकास में दोनों ने अपना अभीष्ट योगदान दिया'।[1]

राधिका शर्मा (1985) ने अपने शोध प्रबंध 'भारतेन्दु युग की साहित्यिक पत्रकारिता: विकास और उपलब्धि' के अंतर्गत भारतेन्दु युग में पत्रकारिता के विकास पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि 'भारतेन्दु युग पुनर्जागरण का युग था जिसके अंतर्गत मध्यकालीन संस्कारों से ग्रस्त भारतीय समाज को सोचने समझने के स्तर पर आधुनिक बनाने का प्रयास किया जा रहा था, और साथ ही साहित्य को नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया जा रहा था'।[2]

लाला वंशीधर (1989) ने अपनी रचना 'भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी पत्रकारिता' के अंतर्गत भारतेन्दु की पत्रकारिता की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि ' उनकी पत्रिकाओं में भारतीयों के हृदय की धड़कन सुनायी पड़ती है । अंग्रेजी - राज्य में जनता की गुलामी के बन्धन और उनके शोषण की उन्होंने सच्ची तस्वीर खींची । उन्होंने अंग्रेजों के तथाकथित न्याय , जनतंत्र और उनकी सभ्यता का पर्दाफाश किया। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दु जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण का चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। ब्रिटिश राज की शोषक प्रकृति का चित्रण करने वाले उनके लेखन के लिए उन्हें युग चारण माना जाता है'।[3]

प्रताप सिंह (2000) अपने शोध कार्य 'बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' की कृतियों में अभिव्यक्त राष्ट्रिय चेतना' के अंतर्गत उनके द्वारा लिखे गए निबंधों के सन्दर्भ में उल्लेख करते हैं कि दरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' का प्रत्येक निबंध राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है और पाठकों को राष्ट्रीय चेतना से जुड़ने हेतु प्रेरित करता है'।[4]

आसिफ सईद (2003) ने अपने शोध अध्ययन 'प्रताप नारायण मिश्र के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना' के अंतर्गत प्रकट किया है कि 'आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रथम उत्थानकाल भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बाल कृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र से ही गौरवान्वित है। इन तीनों निबंधकारों के साहित्यिक योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता'।[5]

अजीत कुमार भारती (2013) ने अपने शोधपत्र 'आधुनिक हिंदी साहित्य व दलित चेतना' के अंतर्गत लिखा है कि 'भारत के नव जागरण काल के अग्रदतू भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र आधुनिक काल के युग प्रणेता साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य गगन पर अवतीर्ण हुए। उन्होंने न केवल स्वयं सामाजिक समस्याओं को अपनी साहित्यिक सर्जना का आधार बनाया वल्कि समकालीन साहित्यकारों को भी युगीन समस्याओं के चित्रण हेतु प्रोत्साहित किया'।[6]

श्रीमती गायत्री औदिच्य (2015) ने अपने शोध अध्ययन 'हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य: समीक्षात्मक आकलन' के अंतर्गत हिंदी गद्य में आत्मकथा लेखन को केंद्र में रखकर लिखा है कि 'आधुनिक युग के वैज्ञानिक बोध ने विश्व मानवता को जो सबसे बड़ा वरदान दिया है, वह है सत्यानुसंधात्मक दृष्टिकोण और उसके प्रति अदम्य अनुराग'।[7]

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोधपत्र लेखिका के पूर्व ज्ञान एवं द्वितीयक तथ्यों के विभिन्न पारम्परिक एवं आधुनिक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों और जानकारियों पर आधारित गुणात्मक अध्ययन है। इसके अंतर्गत हिंदी साहित्य के भारतेन्दु युग के निबंधकारों का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इस हेतु सर्व प्रथम लेखिका द्वारा अपने हिंदी साहित्य सम्बन्धी पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया। इसके अलावा विभिन्न पुस्तकों और इंटरनेट साइटों पर प्रकाशित शोध पत्रों, शोध प्रबंधों आदि से उपयोगी सामग्री संकलित की गई। इसके आधार पर अंत में अध्ययन हेतु चुने गए विषय का निष्कर्ष निकाला गया।

निष्कर्ष

हिन्दी में निबन्ध साहित्य का प्रारम्भ भारतेन्दु युग की पत्र-पत्रिकाओं से होता है। प्रायः तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में उनके सम्पादक उस समय की सांस्कृतिक तथा राजनीतिक समस्याओं पर लेख लिखा करते थे। भारतेन्दु ने सर्वप्रथम कविवचन सुधा तथा हरिश्चन्द्र मैगजीन में साहित्यिक ढंग से निबन्ध लिखे। इसके बाद पं प्रतापनारायण मिश्र तथा पं बालकृष्ण भट्ट तथा बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन ने क्रमषः हिन्दी प्रदीप, ब्राहमण तथा आनन्द कादम्बिनी नामक पत्रिकाओं में निबन्ध लिखे, जिन्हें साहित्यिक कोटि के निबन्ध कहा जाता है। इसी समय पं.बालकृष्ण भट्ट ने विनोदपूर्ण तथा गम्भीर षैली में विवेचनात्मक, आलोचनात्मक तथा भावात्मक निबंध लिखे। बालमुकुन्द गुप्त, प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी इस युग के अन्य प्रसिद्ध निबन्ध लेखक हैं।

गद्य के आरंभ के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। कुछ 10वीं शताब्दी मांनते हैं कुछ 11 वीं शताब्दी,कुछ 13 शताब्दी। राजस्थानी एवं ब्रज भाषा में हमें गद्य के प्राचीनतम प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय सीमा 11वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तथा ब्रज गद्य की सीमा 14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी तक मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि 10वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के मध्य ही हिंदी गद्य की शुरुआत हुई थी।

भारतेंदु युग (नवजागरण काल) 1868 ईस्वी से 1900 ईस्वी तक था। भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का जन्मदाता कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी अपने ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में इसे स्वीकार किया है। सर्वप्रथम भारतेन्दु जी ने ही गद्य विधा में खड़ी बोली का प्रयोग किया था। भारतेंदु जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए बहुत व्यापक आन्दोलन चलाया और अपने आन्दोलन को गति देने के लिये इन्होंने पत्रिकाओं में संपादन किया। आधुनिक काल के प्रथम युग को हरिश्चंद्र के योगदान के काऱण भारतेन्दु युग कहा गया । भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र आदि इस युग के प्रसिद्द निबंधकार थे जिन्होंने अपनी अपनी भाषा शैली में विभिन्न विषयों पर विचारात्मक, विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक निबंध लिखे।

बालकृष्ण भट्ट हिन्दी के सफल पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार और निबंधकार थे। उन्हें आज की गद्य प्रधान कविता का जनक माना जा सकता है। हिन्दी गद्य साहित्य के निर्माताओं में उनका प्रमुख स्थान है। बाणभट्ट सम्राट हर्ष के राजदरबारी कवि थे। संस्कृत भाषा के गद्य शैली के लेखक के रूप में बाण की महती ख्याति थी और आज भी है। इन्होंने दो ग्रंथों की रचना की थी, जिसका नाम है 'हर्षचरित' और 'कादंबरी'। 'हर्षचरित' एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें बाण ने अपने सम्राट हर्ष के आरंभिक जीवन का चाटुकारितापूर्ण चित्रण किया है।

प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु के विचारों और आदर्शों के महान प्रचारक और व्याख्याता थे। वह प्रेम को परमधर्म मानते थे। हिंदी, हिंदू, हिदुस्तान उनका प्रसिद्ध नारा था। समाजसुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने सैकड़ों लेख लिखे हैं। बालकृष्ण भट्ट की तरह वह आधुनिक हिंदी निबंधों को परम्परा को पुष्ट कर हिंदी साहित्य के सभी अंगों की पूर्णता के लिये रचनारत रहे। उन्होंने इतिहास, संस्कृति और भारतीय राजनीति जैसे विभिन्न विषयों पर 50 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य-रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है।

प्रेमधन जी आधुनिक हिंदी के आविर्भाव काल में उत्पन्न हुए थे। इनके अनेक समसामयिक थे जिन्होंने हिंदी को हिंदी का रूप देने में संपूर्ण योगदान किया। इनमें प्रमुख प्रतापनारायण मिश्र, पंडित अम्बिकादत्त व्यास, पं. सुधाकर द्विवेदी, पं. गोविन्द नारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगमोहन सिंह, बाबू राधा कृष्णदास, पं. किशोरीलाल गोस्वामी तथा रामकृष्ण वर्मा थे। प्रेमघनजी की रचनाओं का क्रमशः तीन खंडों में विभाजन किया जाता है : प्रबंध काव्य, संगीत काव्य, स्फुट निबंध। उन्होंने गद्य में निबंध, आलोचना, नाटक, प्रहसन, लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का बड़ी पटुता से निर्वाह किया है। प्रेमघन जी खड़ी बोली गद्य के वे प्रथम आचार्य थे। बाल मुकुन्द गुप्त हास्य-व्यंग्य के लिए लोकप्रिय भारतेन्दु युग के प्रसिद्द निबंधकार थे। उनका व्यंग्य शिष्टता पूर्ण हिंदी और उर्दू मिश्रित भाषा में था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्याम तिवारी, 'प्रताप नारायण मिश्र एवं बाल कृष्णा भट्ट के निबंधों का तुलनात्मक अध्ययन', महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, 1982
2. राधिका शर्मा, 'भारतेन्दु युग की साहित्यिक पत्रकारिता: विकास और उपलब्धि', जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1985
3. लाला वंशीधर, 'भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी पत्रकारिता', बिहार ग्रन्थ कुटीर, 1989
4. प्रताप सिंह, 'बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन' की कृतियों में अभिव्यक्त राष्ट्रिय चेतना', अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, 2000
5. आसिफ सईद, 'प्रताप नारायण मिश्र के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना', हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, 2003
6. अजीत कुमार भारती, 'आधुनिक हिंदी साहित्य व दलित चेतना', शब्द ब्रह्म: भारतीय भाषाओँ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोधपत्रिका, 2013
7. श्रीमती गायत्री औदिच्य, 'हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य: समीक्षात्मक आकलन', कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान), 2015